आत्म-विवेचन

भारतीय दर्शन में अहिंसा का विषय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । प्राचीन काल के दार्शनिकों से लेकर समकालीन दार्शनिकों ने अपने-अपने ढंग से अहिंसा की व्याख्या की है । वैदिक काल से ही मान्यता है कि प्रत्येक प्राणी में चैतन्य या आत्मा का निवास है । अतः इस तात्विक अभिन्नता को समझते हुए हमें अहिंसा का अनुसरण करना चाहिए । मैंने अपने शोध-प्रबन्ध का विषय **"अहिंसा की अवधारणा का दार्शनिक विवेचन (बुद्ध तथा जे० कृष्णमूर्ति के विशेष सन्दर्भ में)"** चुना है। इस शोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है । प्रथम अध्याय में भूमिका है जिसमें प्राचीन काल से लेकर समकालीन भारतीय दार्शनिकों के अहिंसा सम्बन्धी विचार का वर्णन किया है । द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत महात्मा बुद्ध के अनुसार अहिंसा के स्वरूप, उत्पत्ति के कारणों तथा इस से निजात पाने के मार्ग का वर्णन किया गया है । तृतीय अध्याय के अन्तर्गत जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार अहिंसा के स्वरूप, हिंसा की उत्पत्ति के कारण तथा हिंसा से मुक्ति के मार्ग की व्याख्या की गई है । चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत महात्मा बुद्ध तथा जे० कृष्णमूर्ति के अहिंसा सम्बन्धी विचारों की समानताओं तथा असमानताओं का वर्णन किया गया है । पंचम अध्याय के अन्तर्गत अहिंसा की आधुनिक समय में महत्ता पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष के अन्तर्गत चारों अध्यायों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है ।

मुझें प्रो० (डॉ०) ऑर. के. देसवाल पूर्व-अध्यक्ष, दर्शन-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के निर्देशन में शोध कार्य को सम्पन्न् करने का सुअवसर मिला है । इसके लिए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मेरे गुरुदेव डॉ. ऑर. के. देसवाल ने मेरे शोध कार्य के प्रत्येक

अध्याय का अवलोकन करते हुए, मुझे आवश्यकतानुसार महत्त्वपूर्ण सुझाव देते हुए, मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे हैं । मेरे गुरुवर ने मुझे जीवन और जगत् के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना सिखाया । जिससे जीवन सुखात्मक व भावात्मक प्रतीत होता है । मेरे गुरुवर अपने शिष्यों से मिलने के बाद उनमें उर्जा का प्रवाह संचारित कर देते हैं । जिससे विद्यार्थी को अपने अध्ययन सम्बन्धी कार्य को सम्पन्न् करने में कोई कठिनाई नहीं आती। उनके असीम स्नेह, सत्प्रेरणा सहयोग से ही यह शोध-कार्य पूरा हो सका है ।

मैं डॉ० ऑर० के० देसवाल जी की बहुत आभारी हूँ । उन्होंने मुझें पढ़ने के साथ-साथ जीवन-जीने के बहुत महत्त्वपूर्ण पहलू से रूबरू करवाया । उनके सहयोग से हर कठिन काम मुझे सरल लगने लगा । उन्होंने मुझे दार्शनिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान की भी शिक्षा प्रदान की । जो वह समय-समय पर हर शिष्य को देते हैं । उनकी प्रेरणा से मेरा आत्मविश्वास सुदृढ़ होता गया । मैं अपने गुरुदेव के मार्ग दर्शन से ही अपना शोध कार्य सम्पन्न् करने में सफल हुआ । मैं अपने हृदय से जिन शब्दों में उनका धन्यवाद करने की सोचता हूँ वे शब्द उनकी महानता के सामने फीके लगते हैं । मेरे लिए मेरे गुरुदेव व ईश्वर के सदृश पूजनीय है ।

मैं डॉ. अनामिका गिरधर, प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, दर्शन-विभाग की भी विशेष रूप से आभारी हूँ । जो सदैव मुझे प्रेरित करती रही और समय-समय पर मुझे पूर्ण सहयोग दिया।

मैं डॉ० एस० के० शर्मा एवं डॉ० शीलक राम की भी आभारी हूँ। जो शोध-कार्य को सम्पन्न् करने में महत्त्वपूर्ण सुझाव देते रहे ।

मैं अपनी स्नेहमयी माता श्रीमती नन्ही देवी तथा पूज्य पिता नत्थू राम जी का आभारी हूँ । जिनके स्नेह एवं आशीर्वाद से मैं इस शोध-कार्य को पूरा करने में सफल हुआ । मैं अपने पति-पत्नी रीमा शर्मा का भी विशेष रूप से आभारी हूँ । उनके सहयोग से मैं अपना लघु-शोध प्रबन्ध पूरा कर सका । मैं अपनी प्यारी बेटी भूमि शर्मा का भी आभार व्यक्त करता हूँ । जो मेरे शोध-प्रबन्ध के दौरान बीच-बीच में मेरे प्यार से वंचित रही । मैं अपने शुभचिंतकों में मेरे मित्र अनिल मलिक, भूपेन्द्र राणा, विजय भट्टनागर, सीमा काजल, जितेन्द्र कुमार, देवेन्द्र शर्मा, ईश्वर, गौतम, सन्दीप का भी आभारी हूँ, जो मेरे शोध-प्रबन्ध के दौरान सहयोगी रहें । मैं दर्शन-विभाग के गैर-शिक्षण कर्मचारियों का भी उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ । इसके अतिरिक्त विषय वस्तु को शोध-प्रबन्ध का रूप देने में जिन ग्रन्थों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मैंने सहायता ली है । उनके लेखकों, दार्शनिकों व विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ । अन्त में मैं सन्जू चावला व रिंकू चावला (वैब साईट कम्प्यूटरर्स, थर्ड ग्रेट, कुरुक्षेत्र) का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने सही समय पर टंङ्कन का कार्य पूरा किया ।

(जोगेश शर्मा)